

HINDI DAY

14[™] SEPTEMBER, 2018



Dr. V. Narayana Rao, Principal honoured with a bouquet



Dr. P. Srínívasa Rao, Prof. in Hindi, **DBHPS**



Srí E. Vara Prasad, Více - Principal honoured with a bouquet



Srí P. L. Ramesh, Dírector, Academics & Planning



Srí T. Bhagya Kumar, Principal, Jr. College honoured with a bouquet



Dr. G. Sambasíva Rao, Convenor, Kalavedíka



















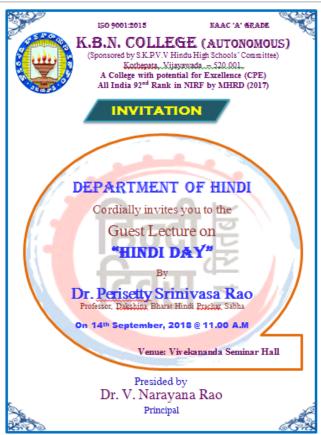






INVITATION





REPORT

काकरपर्ति भवनारायण कलाशाला (स्वायत्त) हिंदी दिवस — समारोह (14 सिंतबर, 2018)

दिनांक : शुक्रवार, 14 सिंतबर, 2018

विजयवाड़ा, 14 सितंबर — विजयवाड़ा, के.बि.एन. कलाशाला (काकरपर्ति भवनारायण कलाशाला) में 'हिंदी—दिवस' समारोह संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ पेरिशेष्ठि श्रीनिवास राव, विशिष्ट अतिथि श्री तूनुगुंट्ला श्रीनिवास राव, समाध्यक्ष और संयोजक कॉलेज के प्रिन्सिपाल डॉ. वी. नारायण राव, के. बि. एन. कलावेदिका के कन्वीनर डॉ.गुम्मा सांभ शिवराव, जूनियर कलाशाला के प्रिन्सिपाल श्री टी भाग्य कुमार, वैस प्रिन्सिपाल वी. वर प्रसाद राव, वैस प्रिसिन्पाल डॉ. नवीन, उपस्थित थे। हिंदी विभाग से मुख्य अतिथि तथा प्रमुख वक्ता डॉ पेरिशेष्टि श्रीनिवास राव ने अपने व्याख्यान में कहा कि —"आज का युग — भूमंडलीकरण का युग है। इक्कीसवीं सती को तो 'अनुवाद का युग' ही कहा जाता है। क्योंकि दिन—ब—दिन दुनिया नजदीक आ रही है। दुनिया के परस्पर निकट आने के कारणों में एक कारण अनुवाद भी है। इसलिए वर्तमान संदर्भ को दृष्टि में रखकर हिंदी की पढ़ाई करने से सरकारी कार्यालयों में अनुवादक की नौकरी के साथ साथ विज्ञापन, सिनेमा, सापटवेर कंपेनियाँ में, पत्रकारिता जैसे विभिन्न प्रयोजन मूलक क्षेत्रों में रोजगारी की अपार संमावनाएँ हैं।

समाध्यक्ष और प्रिन्सिपाल डॉ. वी. नारायण राव जी ने अपने भाषण में हिंदी भाषा का महत्व के बारे में बताते हुए कहा कि भारत की सबसे सुंदर और सरल भाषा हिंदी है। इस भाषा को सीखने की आवश्यकता है और अपनाना हमारा कर्तव्य है।

के.बि. एन कलाशाला के छात्र—छात्राओं द्वारा फोटों प्रदर्शन और पी.पी.टी. प्रस्तुतीकरण हुआ।

विभिन्न विद्यालयों से और महाविद्यालयों से छात्र—छात्राएँ और हिंदी प्रेमी प्रदर्शिनी का दर्शव किये।

विभिन्न प्रतिस्पर्धाओं में विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम में हिंदी विभाग के प्राध्यापकगण जयलक्ष्मी, जानकी, रेणुका और अन्य बढ़—चढ़कर भाग लिये।